प्रश्न ह्यूम का कारणता सिद्धांत

⇒ ह्यूम अनुभववादी है। वे कारणता सिद्धांत की एक नवीन एवं मौलिक विवेचना प्रस्तुत करते है। दर्शन व विज्ञान के क्षेत्र में कारण - कार्य संबंध को वस्तु जगत का एक अनिवार्य एवं सार्वभौम संबंध माना जाता है।

i) कारण एवं कार्य में अनिवार्य एवं सार्वभौम संबंध है।

ii) कारण में कार्य को उत्पन्न करने की शक्ति होती है।

⇒ लॉक इसी कारणता सिद्धान्त से जड़ - जगत की सत्ता को सिद्ध करते है। बर्कले आदि अनेक दार्शनिकों ने इसी नियम के आधार पर ईश्वर एवं आत्मा की सत्ता को सिद्ध करने का प्रयास किया है। वैज्ञानिकों ने भी भौतिक क्षेत्र में अनेक नियमों की स्थापना कारणता के आधार पर ही की है। वस्तुतः आगमनात्मक अनुमान का आधार भी यही संबंध है।

⇒ ह्यूम कारणता सिद्ध संबंधी प्रचलित उपरोक्त दोनों मान्यताओं पर प्रश्नचिह्न लगाते है। उनके अनुसार कार्य - कारण में कोई अनिवार्य, सार्वभौम, वस्तुगत संबंध नहीं है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि ह्यूम कारणता का खण्डन नहीं करते, बल्कि उसकी नवीन अवधारणा प्रस्तुत करते है। इस संबंध में ह्यूम निम्नलिखित तर्क देते है:-

Scanned with CamScanner

(i) ह्यूम के अनुसार कारण - कार्य संबंध आनुभविक है। अनुभव से हमें संस्कार प्राप्त होते हैं जो एक दूसरे से पृथक-2 एवं विशिष्ट होते हैं। पहले हमें कारण कारण का संस्कार फिर कार्य का संस्कार प्राप्त होता है स्पष्ट है कि कारण व कार्य का संस्कार पृथक-2 रूप में मिलता है जो परस्पर स्वतंत्र हैं ऐसी स्थिति में दोनों के मध्य अनिवार्य संबंध की स्थापना तर्कतः नहीं की जा सकती।

(ii) ह्यूम के अनुसार अनुभव व्यक्तिगत होता है एक घटना विशेष तक सीमित होता है ऐसी स्थिति में दो वस्तुओं के देशकाल में निकटता तथा उसकी नियमित क्रमिकता के आधार पर अनेक मध्य सार्वभौम संबंध की स्थापना निश्चयात्मक रूप से नहीं की जा सकती।

(iii) पश्चपशगत कारणता सिद्धांत यह मानता है कि कारण में कार्य को उत्पन्न करने की शक्ति होती है ह्यूम इस अवधारणा का खण्डन करते हुए कहते हैं कि अनुभव से हमें ऐसी किसी शक्ति का ज्ञान नहीं होता। ह्यूम बिलियर्डस के खेल का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जब एक गेंद दूसरे बॉल से टकराती है तो फिर दूसरी गेंद में गति आ जाती है यहां हमें दोनों गेंदों के बीच समीपता का अनुभव तो होता है, परन्तु हमें ऐसा कभी अनुभव नहीं होता कि कोई शक्ति पहली गेंद से निकलकर दूसरी में जा रही हो।

Scanned with CamScanner

⇒ वस्तुतः ह्यूम कारण और कार्य के मध्य आनुभविक संबंध को मानते है वे यह नहीं मानते की बिना कारण के कार्य होगा। ह्यूम का इतना ही कहना है कि इसकी अनिवार्यता को तर्कतः स्थापित नहीं किया जा सकता। कार्य-कारण हमारी मानसिक आयत का परिणाम है।

⇒ जब दो घटनाओं को हम बार-2 क्रमिकता में निकटता के साथ देखते है तो हमारे मन में एक भावना बैठ जाती है। इसी भावना के कारण हम यह आशा करने लगते है कि A के घटित होने पर B भी अवश्य घटित होगा। यह भावना परंपरा एवं आयत के द्वारा विश्वास में परिवर्तित हो जाता है और इसी आधार पर A के घटित होने पर B के घटित होने की अनिवार्यता का बोध होता है।

⇒ ह्यूम प्रकृति के समरूपता कि अवधारणा का खण्डन करते है। इस अवधारणा का आशय है कि भविष्य अतीत जैसा होगा। ह्यूम के अनुसार यह अनुभव पर आधारित नहीं है वस्तुतः यह हमारी मानसिक आयत का परिणाम है। पानी पीने और प्यास बुझने में अनिवार्य संबंध नहीं है यह हमारी मानसिक आयत है। अनिवार्यता वही मानी जाएगी जहाँ विरोधी सोचने पर व्याघात उत्पन्न हो जाए। लेकिन यहाँ ऐसी स्थिति नहीं है।

⇒ कारणता संबंध तार्किक रूप से अनिवार्य संबंध नहीं है। कारण-कार्य में विद्यमान अनिवार्यता तार्किक ना होकर मनोवैज्ञानिक है वस्तुनिष्ठ न होकर आत्मनिष्ठ है। यह हमारी

अभ्यासजन्य आदत का परिणाम है।

* आलोचना : i) यहाँ ह्यूम यह कहते है कि घटनाओं की क्रमिक पुनरावृत्ति से अनिवार्यता का भाव उत्पन्न होता है। ह्यूम इसे मनोवैज्ञानिक स्तर पर मानते है। आलोचकों के अनुसार यदि इसे मनोवैज्ञानिक स्तर पर माना जा सकता है तो फिर वस्तुओं के स्तर पर भी इसे मानने में समस्या नहीं होनी चाहिए।

ii) कभी-2 एक बार में ही कारणता को मान लिया जाता है वहा पुनरावृत्ति की आवश्यकता नही होती। जैसे - द्वितीय विश्वयुद्ध का कारण।

iii) कई घटनाएँ ऐसी है जिनमें पुनरावृति होती है, परन्तु उनमें कारणात्मक संबध नही माना जा सकता। जैसे - दिन रात का संबध।

* महत्व : i) ह्यूम का अनुभववाद लॉक एवं बर्कले के दर्शन में विद्यमान ज्ञानमीमांसा एवं तत्वमीमांसा के अन्तर्विरोधों को दूर करने का प्रयास करता है।

ii) ह्यूम ने अपने संशयवाद के माध्यम से दर्शन के क्षेत्र में अंधविश्वासों एवं पूर्वाग्रहों को दूर करने का प्रयास किया है इससे चिंतन और दृष्टिकोण में विषयनता आती है।

iii) ह्यूम के संशयवाद का गहरा प्रभाव काण्ट पर पड़ा ही काण्ट का कथन है कि ह्यूम के संशयवाद ने उन्हे निद्रावस्था से जगाया।